भारतीय मूर्तिकला के अन्तर्गत चित्रकूट परिक्षेत्र से प्राप्त गणेश प्रतिमाओं

गुंजन बैस

प्राचीन इतिहास संस्कृति
एवं पुरातत्व विभाग
डॉ0 राम मनोहर लोहिया
अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

प्रस्तावना

पंचदेवों में गणपति या गणेश की गणना होती है। गणपति शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'गणों का स्वामी'। गणों का सम्बन्ध शिव से रहा है। शिव गणों के स्वामी की गणपति कहा गया है। गणपति शब्द का उल्लेख ऋग्वेद के एक मंत्र में भी हुआ है।[1] वैदिक साहित्य में वर्णित गणपति शब्द से किसी प्रकार गणेश का बोध नहीं होताा है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि वैदिक देव सूची में गणेश की गणना नहीं हुई है।[2] ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि गणपति अनार्यों के देवता थे, धीरे–धीरे आर्य देवताओं में परिगणित हो गये।[3] महाभारत में गणेश्वरी और विनायकों का उल्लेख है। यह भी कहा गया कि वे विनायक स्तुति से प्रशन्त होने पर विध्न व्याधियों का विनाशा करते हैं।[4] यही कारण है कि गणपति को गणपति–विनायक भी कहते हैं। गणेश या गणपति की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पुराणों में अनेक कथानक मिलते हैं। ऐसी अनेक कथाओं का उल्लेख सम्पूर्णनन्द[5] गोपीनाथ राव[6] ने किया है।

गणेश प्रतिमा के निर्माण का प्राचीनतम वर्णन वराहमिहिर की वृहत्संहिता[7] में है, जिसके अनुसार एकन्दती, गजमुख, लम्बोदर गणपति को परशु तथा कन्दमूल धारी प्रदर्शित होना चाहिए। विष्णुधर्मात्तर पुराण[8] के अनुसार विनायक गजमुख और चतुर्भुज हो उनके दायें हाथों में त्रिशूल और अक्षमाला तथा बायें में मोदक से भरा पात्र तथा परशु लिए हों, वे एकदन्त हो उनका पेट लम्बा हों, कान स्तब्ध हों और वे व्याध्र–चर्म का वस्त्र और यज्ञोपवीत धारण करते हों। इसमें गणेश के वाहन मूषक प्रमुख हैं। उनकी चतुर्भुजी मूर्ति, जो दायें हाथों में स्वदन्त और कमल तथा बायें में मोदक और परशु धारण किये रहती है।

सामान्य गणपति के अतिरिक्त आगम ग्रन्थों में अन्य प्रतिमा प्रकारों का विवरण मिलता है, जैसे–बीज गणेश, हेरम्ब गणेश, क्षिप्र गणेश, बाल गणेश, रात्रि गणेश, वक्रतुण्ड गणेश, उच्छिष्ट गणेश, उन्मत गणेश, नृत्य गणेश, शक्ति गणेश आदि।[10]

कला में गणेश का अंकन कुषाण काल में प्रारम्भ हो गया था, किन्तु आरम्भिक गणेश प्रतिमाओं ने नागों एवं यक्षों की विशिष्टतायें परिलक्षित होती हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार भी आरम्भिक युगीन गणपति प्रतिमाएँ यक्ष समान निर्मित हुई थी। गुप्तकाल के आरम्भिक चरण में गणेश प्रतिमाएं प्रतिमा शास्त्रीय[11] विधानों के अनुरूप निर्मित होने लगी थी, और पुर्वमध्य काल तक आते–आते गणेश प्रतिमाओं का प्रचार व्यापक तौर पर हुआ था इस समय की अनेक प्रतिमाएँ स्थानक, आसन एवं नृत्य मुद्रा में सम्पूर्ण भारत में प्राप्त हुई हैं। यद्यपि एक क्षेत्र की मूर्तियों दूसरे क्षेत्र की मूर्तियों से स्थानीय रचना शैली के कारण थोड़ी बहुत भिन्नता है।[12]

बाँदा– चित्रकूट जनपद भू–भाग से गणेश की अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुयी हैं। गणेश की बहुसंख्यक प्रतिमाओं की उपलब्धता से यह ज्ञात होता है कि बाँदा– चित्रकूट जनपद में वे लोकप्रिय देव थे, और शिव, वैष्णव, शक्ति के सदृश वे पूज देव थे। देवरिया, बरहाकोटरा, ऋषियन, लोखरी दुर्ग, रामनगर, पुरा–पिपरौड़, देवीपुर, चर, गोंड, कालंजर आदि स्थानों से प्राप्त गणेश प्रतिमाएं दो प्रकार की हैं– (1) शैलोत्खात (2) निर्मित। शैलोत्खात वे मूर्तियां है जिनका निर्माण स्वतन्त्र शिलाओं पर नहीं किया गया वरन् पर्वत को तराश कर किया गया है। निर्मित मूर्तियों के अंतर्गत वे गणपति मूर्तियां आती हैं जिनका निर्माण स्वतन्त्र शिलाओं में मन्दिरों में किया गया है। बांदा, चित्रकूट जनपद से प्राप्त गणेश प्रतिमाओं को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(1) स्थानक (2) आसन (3) नृत्यरत।

(1) ऋषियन, खन्देउरा, देवीपुर, चर, गोंडा एवं कालंजर स्थानों से गणेश की आसन प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। प्राप्त प्रतिमाएं द्विभुजी, चतुर्भुजी एवं पष्ठभुजी हैं। एक द्विभुजी गणेश प्रतिमा कालंजर के गणेश द्वारा से प्राप्त है।[13] कालंजर दुर्ग के गणेश द्वार का नाम इसी मूर्ति के कारण हुआ है।[14] गणेश की यह प्रतिमा ललितासन मुद्रा में बैठी है तथा आकार में छोटी है। गणेश एक हाथ में फल तथा दूसरे हाथ में मोदक पात्र लिए हैं। उनक सूड़ बायीं ओर मुड़ा हुआ मोदक पात्र पर रखा है। इसमें गणेश को लम्बोदर दिखाया गया है। इसमें कान एक पट्टिका की तरह है। मूर्ति के नीचे उनका वाहन मूषक बैठा है। सम्पूर्ण प्रतिमा कलात्मक रूप से सुन्दर है।

चर, देवीपुर एवं कालंजर से चतुर्भुजी 'गणेश' प्रतिमायें प्राप्त हुयी हैं। चर से प्राप्त गणेश प्रतिमा मन्दिर के ताख पर ललितासन मुद्रा में बैठे हैं। उनके बायें हाथ में मोदक पात्र तथा कमल हैं और दायें में परशु एवं स्वदन्त लिए हैं। उनके गले में हार, हाथ में कंगन, कटि में मेखला आदि आभूषणों से अलंकृत है। मुख गजानन एवं लम्बोदर है दोनों दांत दिखाई देते है। सूड़ मुड़ा हुआ मोदक पात्र के ऊपर रखा है। शरीर में ढीला सर्प यज्ञोपवीत है। उनका वाहन मूषक बैठा है। सम्पूर्ण प्रतिमा शास्त्रीय परम्पराओं के अनुरूप नहीं निर्मित हैं, फिर भी कलात्मक दृष्टि से सुन्दर है।

देवीपुर से प्रान्त एक अन्य चतुर्भुजी प्रतिमा में गणेश ललितासन मुद्रा में हैं। उनके बायें एक हाथ में परशु, दूसरा उभय मुद्रा में, दायें हाथ में मोदक पात्र एवं कमल हैं। प्रतिमा विभिन्न आभूषणों से अलंकृत है। दोनों प्रतिमायें क्षेत्रीय भिन्नता को दर्शाती हैं।

कालंजर दुर्ग के स्थानीय संग्रहालय में संरक्षित चर्तुभुजी गणेश[15] प्रतिमा तलितासन मुद्रा में है। प्रतिमा के बायें हाथ में परशु तथा मोदक पात्र है दायें में दांत एवं अक्षमाला लिए हैं। सूड बायीं ओर मुड़ा हुआ मोदक पात्र पर रखा है। सिर पर मुकुट, गले में हार, भुजबन्ध एवं सर्प का यज्ञापवीत धारण किए हैं। सिर के पीछे गोले प्रभामण्डल है। गजमुख एवं एकदन्त है। सम्पूर्ण प्रतिमा विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुरूप निर्मित हैं। कलात्मक रूप से प्रतिमा सुन्दर है।

कालंजर के नीलकंठ मन्दिर के समीप एक स्थानक मुद्रा में गणेश की एक चतुर्भुजी प्रतिमा मिली है। जिससे हाथ खण्डित होने के कारण उनके आयुध स्पष्ट नहीं है। सूंड लटका है जिसमें एक मोड़ है। सिर पर मुकुट एवं मस्तक पर लड़ों की माला है। गले में हार, कमर में करधनी, पैरों में पैजन, हाथों के कंगन, भुजबन्ध अंगद आदि आभूषणों से अलंकृत हैं। वे गजमुख, लम्बोदर एवं एकदन्त हैं। शरीर में सर्प यज्ञोपवीत धारण किए हैं। मूर्तिकार प्रतिमा को विभिन्न आभूषणों से अलंकृत कर आकर्षण युक्त बनाने का प्रयास किया था।

गणेश नृत्य प्रतिमाओं का निर्माण गुप्तकाल में होने लगा था।[16] लेकिन पूर्व मध्यकाल में व्यापक हो गया। बाँदा–चित्रकूट जनपद से भी नृत्यत गणेश प्रतिमाएँ मिली है। प्रतिमा शास्त्रीय परम्पराओं के अनुरूप नृत्यरत गणेश अष्टभुजी हो। साथ हाथों में परशु, अंकुश, मोदक, कुठार दन्त, वलय तथा अंगुलीय हो और शेष एक हाथ उन्मुक्त लटकर विविध नृत्य मुद्राओं के प्रदर्शन में सहायक हो।[17] लेकिन उक्त भू–भाग से चतुर्भुजी एवं षष्ठभुजी गणेश प्रतिमायें ही मिली है।

कालंजर से एक षष्ठभुजी नृत्यरत गणेश प्रतिमा मिली है।[18] प्रतिमा के दाहिने हाथों में परशु, दांत तथा तीसरे को मोड़ हुए हैं, बायें एक हाथ में कमल तथा दो खण्डित हैं। सूंड बायीं ओर मुड़ा है। सिर पर लड़ियों की माला, हाथों में कंगन, गले में हार, कटि में मेखला, पैरों मे पैजनिया तथा सर्प का यज्ञोपवीत आदि धारण किए हैं। प्रतिमा का दाहिना पैर खण्डित होने के कारण नृत्य मुद्रा पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं होती है। फिर भी प्रतिमा कलात्मक रूप से सुन्दर हैं।

खन्देउरा, देवीपुर से नृत्यरत गणेश की चतुर्भुजी प्रतिमा शोधकर्ता द्वारा प्राप्त हुई हैं। नृत्यरत गणेश दायें हाथ में परशु तथा उभय मुद्रा में बायें में मोदक पात्र तथा कमल लिये है। गले में हार, हाथों में कंगन, कमर में मेखला, पैरों में पैजनिया आदि आभूषणों से अलंकृत किया गया है। उदर में सर्पों का यज्ञोपवीत धारण किए हैं। कन्धा झुका हुआ हैं। सूड़ मुड़कर बायीं ओर मोदक पात्र के ऊपर रखा है।

उपसंहार

इस प्रकार चित्रकूट परिक्षेत्र से प्राप्त गणेश प्रतिमएँ ने केवल विशेष प्रकार की है, वरन भारतीय सन्दर्भ में यह अन्य स्थानों से अप्राप्य हैं इस परिक्षेत्र से प्राप्त गणेश की यह प्रतिमाऐ भारतीय मूर्तिकला के सन्दर्भ में एक विशेष स्थान रखती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 164. ऋग्वेद 2, 23, 1।
2. सम्पूर्णानन्द, गणेश, बनारस, संवत्, 2001, पृ0 2,3
3. 166. सम्पूर्णानन्द, हिन्दी देव परिवार का विकास, वाराणसी, 1964, पृ0– 147
4. 167. भण्डारकार, वैष्णवइजम् शैवइजम् एण्ड माइनर रिलिज्म सिस्टम्स् पूना, 1954, पृ0
5. 168. राव गोपीनाथ, एलीमेन्ट्स ऑव हिन्दू आइकोनोग्राफी, जिल्द, भाग–1 वाराणसी 1971, द्वितीय संस्करण, पृ0 35–36
6. 169. सम्पूर्णानन्द, गणेश, बनारस् संवत् 2001, पृ0 6–10।
7. 170. वृहत्सहिंता, 58, 58।
8. 171. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, 71, 13–16
9. 172. मत्स्य पुराण, 260, 52–55
10. 173.राव गोपीनाथ, वही, पृ0 51–61
11. 174. अग्रवाल वासुदेवशरणस, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, नगवा वाराणसी 1966, प्रथम संस्करण, पृ0 271।
12. 175. एशियन्ट इण्डिया, नं0 6, पृ0 30–31, प्लेट 4
13. 176. प्रतिमा संख्या, 241
14. 177. मेसी एफ0, डिस्कृप्शन ऑव दी एन्टीक्यूटीज एट कालिंजर, कलकत्ता, 1848, पृ0–18, पाद टिप्पणी– 81
15. 178. प्रतिमा संख्या, 119
16. 179. राव गोपीनाथ, वहीं, जिल्द 1, भाग 1, पृ0 591
17. 180. प्रतिमा संख्या, 1190
18. 181. अग्रवाल वासुदेवशरण, मथुरा कला, अहमदाबाद, 1964, पृ0 741
    182. तिवारी मारूतिनन्दन, वही पृ0 62